

Bhajan

15

नैन हीन को राह दिखा प्रभु

नैन हीन को राह दिखा प्रभु,
पग पग ठोकर खाऊँ मैं ॥

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया,
चलत चलत गिर जाऊँ मैं ॥
नैन हीन को . . .

चहुँ ओर मेरे घोर अन्धेरा,
भूल न जाऊँ मैं द्वार तेरा,
एक बार प्रभु हाथ पकड़ लो,
मनका दीप जलाऊँ मैं ॥
नैन हीन को . . .

साधो ऐसा ही गुरु भावे

साधो ऐसा ही गुरु भावे,
राग रंग का भर भर प्याला,
पीवे और पिलावे ॥
साधो ऐसा ही गुरु भावे . . .

नाद छिपा तन में न मन में,
कोई पता न पावै,
चांद सूरज का लोचन गुरु का,
देखे और दिखावै
साधो ऐसा ही गुरु भावे . . .

परम हंस गुरु अंश रूप जब,
हृदय बीच बिराजे,
सात सुरों की बानी मेरी,
राम नाम गुण गावे ॥
साधो ऐसा ही गुरु भावे . . .

एक ही सब सुख दुख दिखलावे,
शब्द में सूरत समावे,
कहे कबीर ताको भय नाहीं,
निर्भय पद परसावै ॥
साधो ऐसा ही गुरु भावे . . .

प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी

प्रभुजी, तुम चन्दन हम पानी,
जाकी अँग अँग बास समानी ॥

प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा,
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥

प्रभुजी, तुम मोती हम धागा,
जैसे सोने हि मिलत सुहागा ॥

प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती,
जाकी जोति जगै दिन राती ॥

प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा,
ऐसी भगति करै रैदासा ॥

जन्म सफल होगा रे बन्दे

राम नाम जप हे मना, अमृतवाणी मान,
राम नाम में राम को सदा विराजित जान ॥

जन्म सफल होगा रे बन्दे,
मन में राम बसाले,
हे राम नाम के मोती को,
सांसों की माला बनाले,
मन में राम बसाले, जन्म सफल . . .

राम पतित पावन करुणाकर,
और सदा सुखदाता,
सरस सुहावन अति मन भावन,
राम से प्रीत लगाले,
मन में राम बसाले, जन्म सफल . . .

मोह माया है झूठा बन्धन,
त्याग उसे तू प्राणी,
राम नाम की ज्योत जलाकर,
अपना भाग्य जगाले,
मन में राम बसाले, जन्म सफल . . .

राम भजन में डूब के अपनी,
निर्मल करले काया,
राम नाम से प्रीत लगा के,
जीवन पार लगाले,
मन में राम बसाले, जन्म सफल . . .

तेरे मन्दिर का हूँ दीपक

तेरे मन्दिर का हूँ दीपक जल रहा,
आग जीवन में मैं भर कर चल रहा
जल रहा
तेरे मन्दिर का हूँ दीपक जल रहा

क्या तू मेरे दर्द से अंजान है,
तेरी मेरी क्या नई पहचान है,
जो बिना पानी बताशा गल रहा,
आग जीवन में मैं भर कर चल रहा
तेरे मन्दिर का हूँ दीपक जल रहा

इक झलक मुझको दिखा दे सांवरे,
मुझको ले चल तू कदम्ब की छांव रे,
ओ रे छलिया क्यूँ मुझे तू छल रहा,
आग जीवन में मैं भर कर चल रहा
तेरे मन्दिर का हूँ दीपक जल रहा

मैं पथिक मद बांसुरी की बाट का,
एक धुन पर सौ तरह से नाचता,
आंख से जमुना का पानी ढल रहा,
आग जीवन में मैं भर कर चल रहा
तेरे मन्दिर का हूँ दीपक जल रहा

तुम मेरी राखो लाज हरि

तुम मेरी राखो लाज हरि,
तुम जानत सब अंतरजामी, करनी कछु न करी ॥

औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी,
सब प्रपंचकी पोट बाँधि कै, अपने सीस धरी ॥

दारा-सुत-धन मोह लिये हैं, सुधि-बुधि सब बिसरी,
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी ॥

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी,
हे नाथ नारायण वासुदेवा

कान्हा रे तू राधा बन जा

कान्हा रे तू राधा बन जा,
भूल पुरुष का मान,
तब होगा तुझ को राधा की,
पीड़ा का अनुमान रे,
कान्हा रे . . . कान्हा रे . . .

तू चंचल है तू क्या जाने नारी मन की बात,
क्यूँ रहती है राधा के दो नयनों में बरसात,
ओ कान्हा रे कान्हा रे . . .
तू ही जब यह पीड़ न जाना, फिर क्या तेरा ज्ञान,
तब होगा तुझ को राधा की,
पीड़ा का अनुमान रे,
कान्हा रे . . . कान्हा रे . . .

प्रेम दिवानी राधा को तू माखन से ना तौल,
राधा का मन टूट गया तो क्या होगा रे बोल,
ओ कान्हा रे कान्हा रे . . .
देर नहीं है तज दे कान्हा अपना ये अभिमान,
तब होगा तुझ को राधा की,
पीड़ा का अनुमान रे,
कान्हा रे . . . कान्हा रे . . .

तेरे कारण राधा का ये हाल हुआ रे श्याम,
राधा के अधरों पे रहता पल पल तेरा नाम,
ओ कान्हा रे कान्हा रे . . .
ऐसे तो न बन राधा के दुख से तू अंजान,
तब होगा तुझ को राधा की,
पीड़ा का अनुमान रे,
कान्हा रे . . . कान्हा रे . . .

गुरुवर तुम्हारे प्यार ने

गुरु को करिये वन्दना,
भाव से बारम्बार,
नाम सुनौका से किया,
जिसने भव से पार ॥

गुरुवर तुम्हारे प्यार ने,
जीना सिखा दिया,
मुझको तुम्हारे प्यार ने,
इंसान बना दिया ॥

रहते हैं जलवे आपके नजरोँ में हर घड़ी,
मस्ती का जाम आपने ऐसा पिला दिया,
ऐसा पिला दिया ॥
गुरुवर तुम्हारे प्यार ने . . .

जिस दिन से मुझको आपने अपना बना लिया,
दोनो जहाँ को हे प्रभु तब से भुला दिया,
तब से भुला दिया ॥
गुरुवर तुम्हारे प्यार ने . . .

जिस ने किसी को आजतक सजदा नहीं किया,
वो सिर भी मैंने आपके दर पे झुका दिया,
दर पे झुका दिया ॥
गुरुवर तुम्हारे प्यार ने . . .